विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 11-02-2021

वर्ग पंचम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

विद्यां ददाति विनयं,

विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति,

धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

भावार्थ

विद्या से हमे विनय की प्राप्ति होती है , विनय से हमे पात्रता की प्राप्ति होती है , पात्रता से हमे धन की प्राप्ति होती है , धन से धर्म की प्राप्ति होती है और धन से सुख की प्राप्ति होती है।

अलसस्य कुतो विद्या , अविद्यस्य कुतो धनम् ।

अधनस्य कुतो मित्रम् , अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥

आलसी इन्सान को विद्या कहाँ ? विद्याविहीन को धन कहाँ ? धनविहीन को मित्र कहाँ ? और मित्रविहीन को सुख कहाँ ?

आलसी को विद्या कहाँ अनपढ़ / मूर्ख को धन कहाँ निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ |

जो आलस करते हैं उन्हें विद्या नहीं मिलती, जिनके पास विद्या नहीं होती वो धन नहीं कमा सकता, जो निर्धन हैं उनके मित्र नहीं होते और मित्र के बिना सुख की प्राप्ति नहीं होती ।